

करुणा vor *Kummer gebrochen* R. 2, 102, 9. — Vgl. रोग und अरुणा.

— caus. रोजयति (हिंसायाम्) Dhātup. 33, 129. schlagen: ताभ्यां (बा-
हुभ्यां) वक्तस्यत्र रुजत् Bāg. P. 10, 67, 23.

— desid. s. रुरुत्ताणि.

— अत्र *abbrechen*: अत्ररुज्य गुल्मान् MBh. 1, 5884. वज्रणेवावरुणानां
नगानाम् Hariv. 3363. statt अत्ररुज्यम् MBh. 7, 1345 liest die ed. Bomb.
richtiger अत्रस्थानम्.

— अत्र *erbrechen, zerbrechen, abbrechen, ausbrechen, zerhauen*: दूळ्हा
चिदारुजे वसुं RV. 4, 31, 2. पुरः 32, 10, 8, 62, 18. 10, 84, 1. वलम् AV. 4,
24, 2. प्रवृद्धमारुज्य महीप्रोक्तम् MBh. 1, 7178. 3, 423. 11508. 3, 3002. 7,
1123. 12, 12408 (ब्रूणेण रुजता ed. Bomb.). आरुणानैकविटप Varāh. Brh.
S. 19, 20. आरुजन्पर्वताप्राणि Hariv. 6961. अरुजम् R. 5, 93, 25. fg. अरु-
रुजन्दंष्ट्रम् MBh. 3, 4503. पन्तुएउन्वै: — गात्राप्यारुजता *zerfleischend*
R. 3, 72, 20. स्तनानारुज्य करुजैर्भारताः पर्यदेवयन् Hariv. 5694. आरुजं-
त्रिदशादैत्यः सिन्धुवेगो नगानिव 13279. धर्म एतानारुजति यथा नयन्-
कूलज्ञान् (sc. वृत्तान्) MBh. 3, 3433. शल्वध्यातयथा रूपो 7, 1631. मम प्रा-
णानारुजति (बाणाः) 6, 5629. शोकः प्राणानारुजतीव मे । नदीतीररुहा-
न्वृत्तान्वारिवेगो महानिव ॥ R. Gor. 2, 66, 62. केशानारुज्य *sich die Haare*
ausraufend Hariv. 4832. med.: स ह्यः क्रोधेनारुजते दुमान् 4297. 4282.
वियाणां गौरिव मदात्स्वयमारुजते ऽऽत्मनः MBh. 2, 2113. — Vgl. आरुज्
figg., अरोग.

— समा *zerbrechen, abbrechen*: वृत्तं समारुज्य MBh. 4, 1082.

— उद् med. *sich von einem Schläge erholen* (wenn die Lesung rich-
tig ist): यं वै मुक्तं घृति न स पुनरुहुक्ते Shadv. Br. 3, 1. = उत्तिष्ठेत्
Comm. — Vgl. कूलमुहुज.

— समुप oder समुपा *einbauen auf, hart bedrängen*: देवो माखं (als be-
lebtes Wesen gedacht) समुपारुजत् Hariv. 12221.

— परि *rings aufbrechen* AV. 16, 1, 2.

— प्र *zerbrechen*: पुरः RV. 1, 51, 5. वृष्या 102, 4, 5, 2, 10. आरुजन्प्ररु-
जन्भ्रान्विघ्नन्विद्रावयन्तिपन् MBh. 7, 1123. वनस्पतीन् Bāg. P. 8, 2, 19.

— Vgl. प्ररुज.

— त्रि *zerbrechen, zerschmettern, zerreißen*: वि वृत्रस्य समया पाष्या-
रुजः RV. 1, 56, 6. 3, 30, 16. वि रुज वीडुंके 4, 3, 14. 6, 22, 6. रुजदरुणां
वि वलस्य सानुम् 39, 2. वि वृत्रं पर्वशा रुजन् 8, 6, 13. पर्वतं गिरिम् 53,
5. 10, 87, 25. 132, 3. वलम् Ait. Br. 6, 24. AV. 9, 8, 13. पर्वषि 18. श्रौणी
Cat. Br. 4, 3, 3. आण्डम् 11, 1, 1. 2. Kāty. Ça. 22, 3, 22. तस्य शक्तिं स-
कृसा विरुज्य MBh. 8, 4223. धर्मारण्यं विरुजति गजः Çāk. 32, v. 1. विरु-
जन्नुमान् Varāh. Brh. S. 32, 9. विरुणा Bhaṭṭ. 3, 25. 12, 75.

— सम् *zerbrechen*: सं वृत्रेव दासं वृत्रकारुजम् RV. 10, 49, 6. अश्मसंरु-
णाभीमास्य *zerschmettert* Rāgā-Tar. 4, 478.

2. रुज् (= 1. रुज्) 1) adj. *zerbrechend, zerschmetternd*: परवीर° MBh.
3, 2993. — 2) f. *Schmerz, Krankheit* AK. 2, 6, 2, 2. 3, 4, 1, 10. 36, 199. H.
462. Halā. 2, 445. ब्राह्मणस्य रुजः कृत्या M. 11, 67. घोरा रुजस्तीज्राः
Hariv. 10836. fg. Suçr. 1, 38, 15. 70, 1. 163, 4. 2, 2, 1. 3, 1. Kathās. 27, 186.
Bāg. P. 1, 14, 44. Varāh. Brh. S. 71, 3. 81, 30. रुजभय 24, 36. 43, 9. 33,
60. Ragh. 19, 52. रुजमादधाति विपुलाम् Çact. (Br.) 3. शाक्त्यै रुजाम् Spr.
773. यदीमामपनेष्यति । रुजम् Kathās. 29, 164. नृणां पुरुज्जां रुज आशु
रुति Bāg. P. 2, 7, 21. रुजां निदानवित् (भिषक्) 6, 1, 8. मानसी *Seelen-*

schmerz Vikr. 30. अनिशमपि मकरकेतुर्मनसो रुजमावहन् ad Çāk. 34.
दुमुज् *Augenschmerzen, Augenkrankheit* AK. 3, 4, 5, 29. Varāh. Brh. S.
104, 5. अरुज° 31, 11. 104, 16. गुह्य° 3, 86. हृदुज् *Seelenschmerz* Bāg. P.
4, 6, 47. मनसिज् *Liebesschmerz* Vikr. 31. उद्दीपितस्मर° Bāg. P. 2, 7,
33. गण्डस्वेदापनयनरुजा Megh. 27 wohl fehlerhaft für °रुजा *aus Verlan-*
gen, in Folge des eifrigen Bemühens. — Vgl. अ°, प्रकृषी°, नी°, नेत्र°,
पार्श्व°, मन्हा°, मानस°, मुख°, शिरो°.

1. रुज् (von 1. रुज्) 1) adj. *zerbrechend* in वलंरुज. — 2) f. आ Vop. 26,
192. a) *Bruch* (भङ्ग) Trik. 3, 3, 87. H. a. n. 2, 74. Med. g. 14. — b) *Schmerz*
AK. 2, 6, 2, 2. Trik. H. 462. 60. H. a. n. Med. Halā. 2, 445. निपातात्त्व
शस्त्राणां शरीरे याभवदुजा MBh. 8, 1609. रुजाः R. 3, 43, 27. रुजाश्च घो-
राः 63, 19. ललाटे च रुजा जज्ञे 29, 15. शिरसः MBh. 3, 16816. Suçr. 1, 3,
20. 121, 10. 2, 346, 8. 439, 17. हृदयप्रमाथिनी Mālav. 37. निरगादरिव-
र्गस्य हृदयात् रुजास्वरः Kathās. 18, 83. am Ende eines adj. comp.: उग्र°
Suçr. 2, 4, 18. मन्दरुजा 308, 19. — c) = कुष्ठ *Costus speciosus* oder *ara-*
bicus Rāgān. im ÇKDr. — Vgl. अरुज, नीरुज, मन्हारुज, शिरोरुजा, सरुज.

2. रुज् m. von unbekannter Bedeutung in der Stelle: रुजश्च मा वेनश्च
मा कृसिष्ठाम् AV. 16, 3, 2.

रुजस्कार (रुजम्, acc. pl. von 2. रुज् + 1. कर) adj. *Schmerzen bereidend*
MBh. 3, 14144.

1. रुजा *Bruch; Schmerz* s. u. 1. रुज.

2. रुजा f. in der Aneide an den Pfeil (इषु) VS. 10, 8.

3. रुजा f. *Schafmutter* H. 1277.

रुजाकर (1. रुजा + 1. कर) 1) adj. (f. ई) *Schmerzen bereidend* Spr. 4863.
— 2) m. *Krankheit* H. 312. — 3) n. *die Frucht der Averrhoa Caram-*
bola Lin. Çabda. im ÇKDr.

रुजापह (1. रुजा + अ°) adj. *Schmerzen vertreibend* Suçr. 1, 163, 8.

रुजावत् (von 1. रुजा) adj. *schmerzhaft* Suçr. 2, 3, 16. 308, 11.

रुजाविन् (wie eben) ved. adj. P. 5, 2, 122, VArtt. 1. wohl *schmerzhaft*.

रुजासह m. *ein best. Fruchtbaum*, = धन्वन Rāgān. im ÇKDr.

रुद्, रौठते (प्रतिघाते, दीप्तौ) Dhātup. 18, 7. रौठयति (रोषे) v. l. für रुष्
32, 131. (भाषार्थ, भासार्थ) 33, 110.

रुद्, रौठति (उपघाते) Dhātup. 9, 51. रौठते (प्रतिघाते) 18, 9, v. l. *quälen,*
peinigen: रौठमानस्य वैदेकीं मासार्थं वायसस्य R. 5, 66, 30; vgl. काके-
नालोड्यमानां ताम् 2, 103, 39 (काकेनारोड्यमानां ताम् 96, 40 Schl.).

रुणास्कारा f. *eine Kuh, die sich leicht melken lässt*, Çabda. im ÇKDr.

रुणा f. N. pr. eines in die Sarasvatī sich ergießenden Flusses
MBh. 3, 7022.

रुण्ड्, रूण्डति (स्तेये) Dhātup. 9, 41.

रुण्ड्, रूण्डति (गती) Dhātup. 9, 61. (आलस्ये, प्रतिघाते, खेटे) 58, v. l.
(स्तेये) 41, v. l.

रुण्ड्, रूण्डति (स्तेये) Dhātup. 9, 41, v. l.

रुण्ड adj. *verstümmelt*; m. *ein verstümmelter Mensch, ein blosser*
Rumpf (कबन्ध) H. 563. Hār. 137 (neutr.). Halā. 3, 8. पृष्ठः स रुण्डः पु-
रुषो ऽभ्यधात् । निकृत्तस्तचरणो नद्यो तित्तो ऽस्मि शत्रुभिः ॥ Kathās.
63, 11. तद्वार्या तेन रुण्डेन रेमे 15. 41. तां सरुण्डाम् 40. तां पृष्ठारुण्ड-
काम् 32. वेष्टद्वैरवभूरिरुण्डनिकरैः Uttarar. 93, 12 (124, 6).

रुण्डिका f. 1) *Schlachtfeld*. — 2) *Liebesotin*. — 3) *Thürschwelle* Med.